21/07/2020

PHILOSOPHY (Sub/Hons)

Ajeet Kumar
Assistant Professor
C.M.S College, Banwarinagar, Kaimur

सुखवाद

सुखवाद नीतिशास्त्र का वह सिद्धान्त है जिसके अनुसार सुख ही मानव के कार्यों का मूल प्रेरक तत्व तथा अन्तिम आदर्श है इस सिद्धांत की यह मान्यता है कि मनुष्य स्वभावतः सुख के समीप होना चाहता है तथा दुःख से दूर होना चाहता है। दूसरे शब्दों में सुख-प्राप्ति तथा दुःख परिहार ही मनुष्य का स्वभाव है। यह स्वभाव ही मानव का आदर्श है। यदि सुख प्राप्त करना हमारा स्वभाव है तो हमें वही कार्य करना चाहिए जिससे सुख प्राप्त हो जिस कार्य से हमें सुख मिलता है वही हमारा कर्तव्य है, वही हमारे लिये उचित है वह हमारा आदर्श है इसके विपरीत कार्य से दुःख मिलता है वह हमें नहीं करना चाहिए वह हमारे लिए अनुचित है। इस प्रकार उचित तथा अनुचित का आधार सुख और दुःख है।

एव ही इच्छा हमारे आदर्शों की मूल प्रेरणा है। अतः सुखद या सुखदायक कार्य ही शुभ है तथा दुःखद या दुःखदायक कार्य ही अशुभ है।

शुभ का निर्धारण भी हमारे स्वभाव पर निर्भर है गया सुखी होना ही स्वभाव है तो सुख कार्य ही हमारे लिए शुभ है। इस सिद्धांत अर्थात सुखवाद की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि मानव स्वभाव के विश्लेषण अर्थात सुखवाद पर मानव के लिए आदर्श का निर्धारण करता है। हमारे लिए वही आदर्श उपयुक्त होगा जो स्वभाव के अनुकूल हो तात्पर्य यह है कि हमारे लिए उचित वही है जो स्वभाव के अनुकूल हो तथा अनुचित वह होगा जो हमारे लिए प्रतिकूल हो। अतः उचित-अनुचित शुभ-अशुभ कर्तव्य-अकर्तव्य आदि का निर्धारण हमारे स्वभाव के अनुसार होना चाहिए।